मेरा पन्ना

अस्सू और कूनी
जब भी सैर करने जाते,
सड़क के आसपास, पगडण्डी पर लगे
छोटे-छोटे जंगली फूल तोड़कर, उन्हें घास के
नरम और लम्बे तिनके से बाँधते और घर लाकर माँ को देते।
“माँ, यह देख... हम क्या लाए तुम्हारे लिए...
फूलों का गुलदस्ता”

कूनी बहुत सारे रंगों के गुब्बारे
लेकर इधर-उधर घूमता हुआ
बोल रहा था,
“मैं गुब्बारे वाला हूँ,
गुब्बारे वाला...
गुब्बारे ले लो रंगबिरंगे
सस्ते हैं, नहीं हैं महँगे।”

अस्सू और कूनी की कुछ रचनाएँ

अस्सू और कूनी की कुछ रचनाएँ

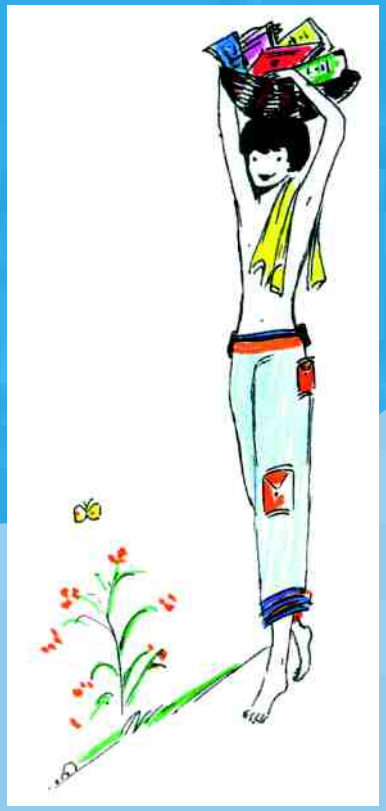

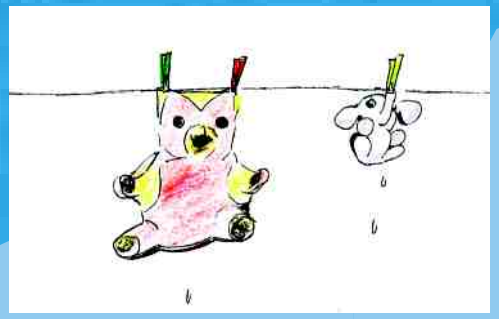

भालू और हाथी
भीग गए...
धूप में उनको टाँग दिया
तो घबरा के ही सूख गए।

अस्सू सिर पर टोकरी
उठा के घूमता हुआ हाँक
लगाता,
कहानी वाला आया
कहानी वाला...
टोकरी भर के
कहानियाँ लाया...
कहानी ले लो कहानी।

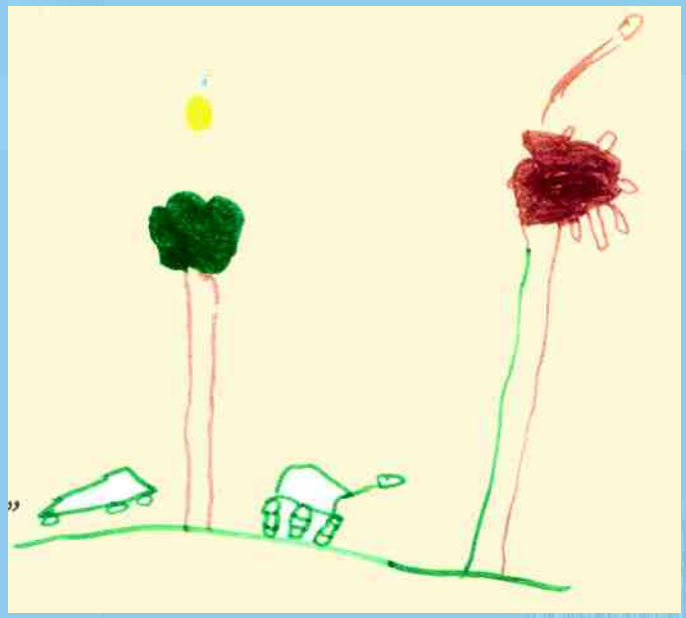

एक दफा की बात है एक सड़क पर दो पेड़ लगे हुए थे। उनमें से एक पेड़ हरा था और दूसरा भूरा पेड़ फलियों वाला था। पीला सूरज आसमान में चमक रहा था। उस सड़क पर एक कार जा रही थी। उस सड़क पर एक ऊँट भी जा रहा था। ऊँट ने देखा, हवा चल रही थी। फलियों वाले पेड़ से एक फली हवा में उड़ गई। वह घबरा कर बोला, "पकड़ो, पकड़ो... उस फली को पकड़ो।"

एक दफा की बात है। एक लड़का किश्ती में बैठा था। उसने अपने लिखने वाले हाथ में सात रंग के गुब्बारे पकड़ रखे थे – लाल, नीला, पीला, नारंगी, हरा, गुलाबी और भूरा। समुद्र के पानी में किश्ती तैर रही थी। समुद्र के पानी में एक सतरंगी मछली भी तैर रही थी। उसके भी सात रंग चमक रहे थे। पानी में – लाल, नीला, पीला, नारंगी, हरा, गुलाबी और भूरा। तेज़ हवा चल रही थी। उस लड़के के बाल भी उड़ रहे थे, कपड़े भी उड़ रहे थे, हाथ में पकड़े हुए गुब्बारे भी उड़ रहे थे। सतरंगी मछली लेकिन तैर रही थी।

अस्सू और कूनी दो भाई हैं जो धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में रहते हैं।.....

मेरा पन्ना

आम का पेड़ और तूफान

एक दिन आम के पेड़ पर चार कौए बैठे थे। और एक घोंसले को देख रहे थे। अचानक एक बड़ा तूफान आया और पेड़ हिलने लगा। फिर सब डर के मारे पेड़ से नीचे उतर गए और भागने लगे।
वहीं एक बन्दर था। वह बहुत ही मूर्ख था। उसने एक पत्थर मारा कि तूफान भाग जाए। लेकिन यह क्या था? जो पत्थर बन्दर ने मारा था वह मधुमक्खी के छत्ते में लगा। सारी मधुमक्खियाँ उसे काटने लगीं बेचारा बन्दर रो पड़ा था।

कनई पटेल, तीसरी, देवास, म.प्र.

कोमल, गंगानगर, राजस्थान

कमल

ओलीविया विश्वास, तीसरी, मुम्बई

श्रेया, पाँचवीं, बैतूल, म. प्र.

आटा

हमने गिराया आटा
मम्मी ने मारा चाटा
आटे के जब देखे रंग
हम तो भइया रह गए दंग
काला, पीला और सफेद
व्यंजन बनते इसके अनेक
आटे से हम पूड़ी बनाते
पंजाबी सब मक्का खाते
हम सब खाते नाचते-गाते
रुचि यादव,